शुक्रवार, 27 मार्च 2020, प्रात: 2 बजे दादी जानकी जी ने 104 वर्ष की जीवन यात्रा पूरी कर अपने भौतिक शरीर को छोड़ प्यारे बापदादा की गोद में समा गई। उनके पार्थिव शरीर को पाण्डव भवन, ज्ञान सरोवर की परिक्रमा कराते, शान्तिवन लाया गया, स्नेह श्रंधाजलि अर्पित करने पश्चात दोपहर 12.00 बजे कान्फ्रेन्स हाल के सामने बगीचे में पुराने शरीर का संस्कार हुआ। शाम के समय दादीजी मीटिंग हाल में शशी बहन ने दादी जी के निमित्त विशेष भोग लगाया, वतन का दिव्य सन्देश इस प्रकार है:-

आज देश-विदेश के सभी भाई-बहनों की यादप्यार लेकर जैसे ही मैं वतन में पहुंची तो वतन बहुत ही सुन्दर सजा हुआ दिखाई दे रहा था। एक तरफ अनेक फरिश्ते अपने हाथों में मालायें लेकर खड़े थे और सामने एक चमकती हुई लाइट के बीच दादी जी दिखाई दे रही थी। पहले फरिश्तों ने दादी जी का स्वागत किया और दादी को एक सुन्दर तख्त पर बिठाया। जिस पर लिखा था – विश्व अधिकारी, सर्व के दिलों को जीतने वाली। फिर फरिश्ते दादी जी के सामने फूल डालने लगे, तो उन फूलों की डिजाइन से शब्द बन रहे थे - ''कदम-कदम में पदम''। दादी तो बहुत ही न्यारी और प्यारी होकर सब देख रही थी। फिर सामने से बाबा आते हुए दिखाई दिये, तो बाबा को देखते ही दादी ने हाथ फैलाकर कहा मेरा बाबा आ गया। फिर दादी ने बाबा से कहा बाबा यह सब ऐसा क्यों कर रहे हैं? तो फरिश्ते बहुत मीठी आवाज में कहते हैं कि सारे विश्व की पालना करने वाली हमारी मीठी माँ, जिनके कदमों में पदम हैं वो आज हमारे बीच में है, तो हम आज खुशी में नाच रहे हैं। फिर लाइट से ही दादी का पूरा श्रृंगार हो गया। थोड़ी देर में यह सीन मर्ज हो गई और सामने शान्ति स्तम्भ और कई पिल्लर्स दिखाई दिये, जिनके बीच में बहुत अच्छा रास्ता था। तो बाबा ने कहा बच्ची ने अनेक ऐसे पिल्लर्स तैयार किये हैं जो विश्व परिवर्तन के कार्य में लगे हुए हैं। तो सामने कई प्रकार के प्रोफेसन्स वाले लोग थे, जैसे साइन्टिस्ट, राजनेतायें, धर्म नेतायें आदि... वे सभी दादी जी के प्रति अपनी-अपनी भावनायें प्रकट कर रहे थे।

फिर मैंने कहा दादी आप तो उड़कर बाबा के पास आ गई। आप ऐसे क्यों चली आई? तो दादी ने कहा मेरा यह शरीर रोज़-रोज़ खेल करता था, मैं बाबा को कहती थी बाबा अभी यह शरीर साथ नहीं देता है, तो बाबा ने मुझे वतन में बुला लिया। फिर बाबा ने कहा बच्ची भले शारीरिक तौर पर बेड पर थी, लेकिन बाबा बच्ची को सारे विश्व का भ्रमण कराते थे। बच्ची हर एक के अन्दर विश्व परिवर्तन के कार्य के लिए बल भरती, प्रेरणायें देती रही। तो दादी कहती है बाबा यह तो आपका कार्य है, मैं तो निमित्त मात्र हूँ। करावनहार तो आप हैं। तो बाबा ने कहा बच्ची, अभी एडवान्स पार्टी के भी ऐसे कई कार्य रहे हुए हैं, उसमें योगदान देने, विश्व परिवर्तन के कार्य में और तेजी लाने की जिम्मेवारी बाबा आपको दे रहे हैं। तो दादी मुस्करा रही थी।

फिर बाबा ने पूरे ब्राह्मण परिवार को वतन में इमर्ज किया तो कहती है बाबा इतने सब यहाँ क्यों आये हैं? तो बाबा ने कहा इन सबके दिल में आपके प्रति बहुत प्यार है, यह सभी अपने प्यार की भावनायें प्रकट करने आये हैं। अभी वर्तमान समय विश्व के अन्दर ऐसी परिस्थितियां हैं, जो कोई साकार में नहीं पहुंच सके हैं, इसलिए बाबा ने सबको वतन में बुला लिया है। तो दादी सबको बहुत प्यार से देख रही थी।

मैंने कहा दादी आज सभी दादियां, वरिष्ठ भाई-बहनें आपके सभी सेवा साथी आपको बहुत याद कर रहे हैं। तो यह सभी वतन में इमर्ज हो गये और दादी ने बाबा का हाथ पकड़करके जैसे सबका हाथ बाबा के हाथ में दे दिया और कहा यह सभी तो बाबा की छत्रछाया में हैं, सभी बहुत प्यार से सेवायें कर रहे हैं। मैं भी इन सबके साथ रहकर बहुत कुछ सीखती रही, मुझे जैसे छोटे बच्चे की तरह चलाते रहे। फिर कहती है बाबा मैं इनको सेवा का रिटर्न क्या दूं! इन्होंने तो मुझे बहुत कुछ सिखाया है, अनुभव कराया, हल्का रखा, आगे बढ़ाया। तो बाबा ने कहा आपने तो लास्ट तक नष्टोमोहा का ही पार्ट बजाया, न्यारी और प्यारी इग्जाम्पल बनकर बाप के पास आ गई।

फिर मैने कहा कि दादी आपके प्रति आज विशेष भोग लेकर आई हूँ। तो बाबा दादी जी को भोग स्वीकार कराने लगे, तो कहती है बाबा मैं अकेले तो नहीं खा सकती हूँ, इन सबको भी खिलाओ। तो बाबा ने दादी के साथ सभी को भोग खिलाया। फिर मैने कहा दादी आपको इन सबके लिए कुछ कहना है। तो बोली, बाबा कहते हैं सदा एकनामी और एकॉनामी का पाठ पढ़ना। मैंने तो यही पढ़ा है, इसका ही सभी ध्यान रखें। समय अनुसार अब पुरुषार्थ में नवीनता लानी है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना है। अभी जो कार्य रहा हुआ है उसे जल्दी जल्दी सम्पन्न करना है। एक बल एक भरोसा, मैं और मेरा बाबा, सदा बाबा के साथी बनकर, बाबा का हाथ पकड़कर, बाबा के कदम पर कदम रखते उड़ते और उड़ाते रहना।

फिर बाबा ने कहा देखो, अभी यह परिस्थितियां भी अपने कार्य को सम्पन्न करने के लिए अपना रूप दिखा रही हैं। आगे चलकर इन परिस्थितियों से भी सेवा का स्वरूप बदलेगा और प्रत्यक्षता होगी। ऐसे कहते बाबा ने सबको याद दिया और मैं वापस आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।